© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 08 , Issue : 04 | October 2021

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के राजनीतिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

राम जुवारी पी. एच. डी. शोधार्थी

इतिहास विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, (म०प्र०)

सारांश

लोकमान्य का व्यक्तित्व और संपूर्ण जीवन संघर्ष की एक संगठित कहानी है। इतिहास ने उन्हें जो प्रेरणा दी उस प्रेरणा से वशीभूत होकर उन्होंने नए इतिहास की रचना की थी। सी वाई चिंतामणि जो तिलक के आलोचक थे उन्होंने भी यह स्वीकार किया कि स्वाधीनता का उत्कट प्रेम उनके जीवन का स्थाई भाव था। यह सही है कि उनके लिए स्वराज धर्म था, स्वराज्य उनके लिए जीवन था। उनके अपने ही एक लेख के अनुसार स्वराज के बिना हमारा जीवन और हमारा धर्म व्यर्थ है। एक तरफ तिलक का यह दृष्टिकोण था और दूसरी तरफ ब्रिटिश शासन की निरंकुशता थी। लोकमान्य यह पूरी तरह से जानते थे कि स्वराज की मांग ही ब्रिटिश सरकार को अप्रसन्न करने वाली है। स्वराज्य को प्राप्त करने के लिए जो उपाय किए जाएंगे। उनसे अंग्रेजों का अप्रसन्न होना स्वभाविक था। अध्यापन के कार्य से मुक्त होने के बाद केसरी और मराठा में जिन विचारों का प्रतिपादन किया उनसे ब्रिटिश शासन नाराज हुआ उन पर दो बार राजद्रोह का मुकदमा चला और उन्हें कारावास का दंड भी भोगना पड़ा।

मूल शब्द : राजनीतिक, राष्ट्र, स्वतन्त्रता, स्वराज्य इत्यादि ।

प्रस्तावना

बाल गंगाधर तिलक अपनी राष्ट्र भक्ति, देश के प्रति अपने अथक त्याग व बलिदान के लिए जाने जाते हैं। उनके काल में कोई दूसरा ऐसा नेता नहीं था जिसे जनता उनसे अधिक प्यार करती हो। जनता उन्हें 'लोकमान्य' कहकर पुकारती थी। वे आधुनिक भारत के महानतम कर्मयोगियों में से हैं। उन्होंने भारतवासियों को स्वराज्य के अधिकार का प्रथम पाठ पढ़ाया। सर वैलेण्टाइन शिरोल द्वारा तिलक को 'भारतीय अशान्ति के जनक' की उपाधि देना उस महान्

भूमिका का प्रमाण है जो तिलक ने नवीन राष्ट्रवाद के प्रचार करने में अदा की। राजनीति के सम्बन्ध में तिलक ने आदर्शवादी मार्ग नहीं अपनाया।

ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह उनके अंग-अंग में निहित था। तिलक जीवनभर नौकरशाही के लिए खतरा बने रहे। राष्ट्रीय आन्दोलन को नया जीवन प्रदान करने के लिए तिलक ने 'गणपति उत्सव' और 'शिवाजी उत्सव' प्रारम्भ किए। तिलक ने कहा था, भाट की तरह से गुणगान करने से स्वतन्त्रता नहीं मिल जाएगी। स्वतन्त्रता के लिए शिवाजी और बाजीराव की तरह साहसी कार्य करने पड़ेंगे।" जन-जागति के लिए तिलक ने 'मराठा' तथा 'केसरी' नामक दो समाचार-पत्रों का सम्पादन किया।

तिलक की स्वराज्य सम्बन्धी अवधारणा

तिलक प्रथम भारतीय थे जिन्होंने घोषणा की कि "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।"

गोखले की तरह तिलक अंग्रेजों की कृपा पर जीवित नहीं रहना चाहते थे। वे स्वल्वा को अपना सा अधिकार मानते थे। उन्होंने आह्वान किया कि भारतीयों को स्वराज्यात करने के लिए त्याग करना होगा, कट सहने होंगे और अपना सर्वस्व योवावर करना होगा। वास्तव में तिलक लोकतान्त्रिक स्वराज्य के प्रवर्तक विचारक थे। वे एक ऐसी शासन व्यवस्था चाहते थे। जिसमें सभी अधिकारी और कर्मचारी जनता के प्रति उत्तरदायी हो और अन्तिम सत्ता जनता के हाथ में हो। 1897 में तिलक ने स्वराज्य का नारा लगाया। जब सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया, तो वकील के पूछने पर तिलक ने उत्तर दिया "गुलाम जाति के लिए स्वाधीनता की कामना करना न तो बुरा है और न कोई अपराध।" तिलक के प्रयासों से सन् 1906 में कांग्रेस ने स्वराज्य का प्रस्ताव पारित किया। गोखले, मेहता और बनर्जी इसे बदलवाने की कोशिश में थे। तिलक ने इसका घोर विरोध किया। सन् 1907 में तिलक के विरोध के कारण बहुमत के आधार पर उन्हें कांग्रेस से निकाल दिया गया। सरकार ने उन्हें 6 वर्ष का कारावास देकर माण्डले जेल में डाल दिया। जेल से हटकर उन्होंने फिर स्वराज्य आन्दोलन प्रारम्भ किया।

मृत्यु के समय भी उन्होंने कहा कि यदि स्वराज्य नहीं मिला, तो भारत समृद्ध नहीं हो सकता। स्वराज्य हमारे अस्तित्व के लिए अनिवार्य है।

तिलक के स्वराज्य सम्बन्धी विचार निम्न प्रकार हैं

(1) स्वराज्य की धारणा प्राकृतिक सिद्धान्त पर आधारित-

उदारवादी विचारधारा के अनुसार ब्रिटिश शासन एक दैविक शासन था तथा उसके द्वारा भारत का जो कल्याण हुआ है.वह उसके बिना सम्भव नहीं था | बिटिश सरकार शनै-शनैः वह सब अधिकार हमें देगी जिसके हम धीरे-धीरे अधिकारी होते जाएंगे। तिलक इस उदारवादी विचारधारा के विरुद्ध थे। तिलक ने भारतीयों के कल्याण के लिए स्वराज्य को ही सही बताया। स्वशासन का अधिकार वह मानव का प्राकृतिक अधिकार मानते थे।

(2) तिलक की स्वराज्य सम्बन्धी धारणा-

तिलक ने बंग-भंग आन्दोलन के समय सन् 1905 में तथा फिर दोबारा सन् 1916 के लखनऊ अधिवेशन में कहा. "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा"। तिलक स्वराज्य को राजनीतिक नहीं अपितु नैतिक आवश्यकता मानते थे। उनकी स्वराज्य की धारणा प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्यों के आधार पर है । वे स्वराज्य का अर्थ स्वधर्म आचरण की स्वतन्त्रता से लगाते हैं। उनकी स्वराज्य सम्बंधित धारणा छत्रपति शिवाजी तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती के जैसी थी।

(3) तिलक की स्वराज्य व्यवस्था -

उदारवादी कांग्रेसियों के अनुसार स्वराज्य का अर्थ ब्रिटिश शासन के अन्दर गृह शासन की व्यवस्था से था। तिलक उदारवादियों का औपनिवेशिक स्तर वाला स्वराज्य नहीं चाहते थे। उन्होंने स्वराज्य की व्याख्या पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र से मिलती-जुलती की। जन-साधारण में स्वराज्य की भावना विकसित करने हेतु उन्होंने सन् 1916 में 'होमरूल लीग' की स्थापना की। 'होमरूल लीग' का उद्घाटन करते हुए तिलक ने कहा था कि स्वराज्य से अभिप्राय केवल यह है कि भारत

के आन्तरिक मामलों का संचालन और प्रबन्ध भारतवासियों के हाथों में हो। हम ब्रिटेन के सम्राट को बनाए रखने में विश्वास करते हैं।"

(4) स्वराज्य प्राप्त करने के साधन -

तिलक ने यह भी बताया कि किन उपायों से हम स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं। स्वराज्य को एक नैतिक कर्तव्य मानते हुए एक बार उन्होंने कहा था कि "स्वराज्य एक अधिकार ही नहीं वरन् एक धम भा ह उनके स्वराज्य प्राप्ति के साधन भी स्वराज्य की धारणा के समान ही शाश्वत सत्य पर आधारित हैं। उनका कहना था कि "स्वराज्य दिया नहीं जाता, बल्कि प्राप्त किया जाता है।"

वे उदारवादियों की याचना, प्रार्थना आदि में विश्वास नहीं करते थे। उनका कहना था कि "स्वराज्य आज तक किसी विदेशी सत्ता द्वारा किसी अधीन राज्य को नहीं दिया गया है, इसका गवाह इतिहास है। जितने राष्ट्रों ने स्वराज्य प्राप्त किया है, उन्होंने अपने प्रयत्नों से ही प्राप्त किया है। याचिका की पद्धति को संघर्ष की पद्धति में बदलकर ही किसी राष्ट्र को आगे बढ़ने का अवसर मिल सकता है। यदि किसी जाति में संघर्ष करने की क्षमता नहीं है,तब निश्चित ही वह जाति पिछड़ी जाति है।" स्वराज्य के लिए तिलक क्रियात्मक उपायों को अपनाने पर बल देते हैं । इनके साधन निम्नलिखित हैं

(अ) राष्ट्रीय शिक्षा-

राष्ट्रीय शिक्षा उनके कार्यक्रम का मुख्य अंग था। उन्होंने पूना में 'न्यू इंग्लिश स्कूल' तथा 'फर्ग्युसन कॉलेज' की स्थापना की। तत्कालीन शिक्षा आयोग के अध्यक्ष डब्ल्यू. हण्टर ने 'न्यू इंग्लिश स्कूल के प्रति अपने विचार प्रकट करते हुए कहा था, "समस्त भारत में मैंने इस प्रकार की एक भी संस्था अभी तक नहीं देखी जिसकी इसके साथ तुलना की जा सके।

तिलक निम्न उद्देश्यों के कारण राष्ट्रीय शिक्षा को प्रभावपूर्ण बनाना चाहते

(i) शिक्षा भारतीयों के द्वारा व भारतीयों के लिए हो।

(ii) जनता को सस्ती अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करना।

(iii) विद्यार्थियों को एक नवीन शिक्षा प्रणाली से शिक्षित करना।

(iv) राष्ट्रीय शिक्षा के द्वारा कुछ ऐसे युवकों को शिक्षित करना जिनके अन्दर राष्ट्रीय भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी तथा जो स्वयंसेवक का कार्य सुगमतापूर्वक कर सकें। तिलक धर्मनिरपेक्ष शिक्षा को ही पूर्ण न मानकर धार्मिक व आदर्श शिक्षा पक्षधर थे। वे मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते थे। राजनीति की सफलता के लिए वे शिक्षा को आवश्यक मानते थे।

(ब) स्वदेशी आन्दोलन -

उदारवादी नेता दादाभाई नौरोजी रानाले, देशमुख, स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि स्वदेशी भावना का प्रयास तिलक ने महाराष्ट्र के कोने-कोने में स्वदेशी आन्दोलन द्वारा राष्ट्रवादी विचार को फैलाया।

स्वदेशी आन्दोलन का अर्थ था- देश की बनी वस्तुओं का प्रयोग। उन्होंने स्वदेशी शिक्षा स्वदेशी विचार तथा स्वदेशी जीवन-पद्धति आदि सभी क्षेत्रों में इसका प्रयोग किया। तिलक ने स्वदेशी आन्दोलन में विदेशी बहिष्कार भी जोड दिया। स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग किया जाए और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया जाए-यह नारा तिलक ने दिया। उसके साथ तिलक ने कहा कि हमें अपने धर्म संस्कृति, भाषा और सभ्यता को पश्चिम से श्रेष्ठ समझना चाहिए और अपनी संस्कृति को अधिक महत्त्व देना चाहिए। उदारवादी पाश्चात्य भाषा और संस्कृति को अपनाने के पक्ष में थे, जिनका तिलक ने घोर विरोध किया। तिलक ने अनेक विद्यालय खोले और चन्दा इकट्ठा कर नये उद्योग-धन्धे भी प्रारम्भ कराए। तिलक बहिष्कार द्वारा ब्रिटिश शासन पर दबाव डालकर जनता की मांगें मनवाने के पक्ष में भी थे। तिलक स्वदेशी को अपनाने और विदेशी का बहिष्कार करने को एक सशक्त हथियार मानते थे। वे अपनी फौज भेजकर अंग्रेजों की सहायता करने के भी विरोधी थे। तिलक के विदेशी बहिष्कार को अपनाकर ही गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन चलाया। यह असहयोग तिलक के बहिष्कार का ही नवीन संस्करण था।

तिलक के सामाजिक विचार

प्राय:आलोचकों द्वारा यह आक्षेप लगाया जाता है कि तिलक सामाजिक जीवन में सुधारों के विरोधी थे। वास्तव में तिलक समाज-सुधार के विरोधी नहीं थे, वरन् समाज-सुधार के सम्बन्ध में उनका अपना एक विशिष्ट दृष्टिकोण था,जिसे निम्न प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं

(1) तिलक समाज - सुधार के विरोधी नहीं थे. अपितु वे सरकारी कानून बनाकर समाज-सुधार करने की पद्धति का विरोध करते थे। वे सामाजिक सुधारों को उचित सामाजिक शिक्षण के माध्यम से क्रियान्वित कराना चाहते थे।

(2) उनका विचार था कि समाज- सुधार का कार्य धीरे-धीरे और व्यक्तियों को मनोभावनाओं में परिवर्तन करते हुए ही सम्भव है। समाज- सुधार थोपे नहीं जा सकते , यह कार्य तो शिक्षा की प्रगति के साथ धीरे-धीरे सम्भव है।

(3) तिलक के अनुसार समाज- सुधार के कार्य में शक्ति व्यय न करके पहले समर्ण शक्ति राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने में लगा दी जाए। ऐसा - समाज-सुधार करना सरल होगा।

(4) तिलक जाति - पाति और अस्पृश्यता में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंन गणेश उत्सव में निम्न जाति के लोगों को ऊंची जाति के लोगों के साथ अपनी गणेश प्रतिमाएं लेकर चलने की अनुमति दी। उनके अनुसार अस्पृश्यता को किसी भी नैतिक और आध्यात्मिक आधार पर उचित नहीं ठहराया जा सकता,अतः इसका अन्त होना चाहिए।

(5) उन्होंने बाल - विवाह तथा बहुपत्नी विवाह का भी विरोध किया।

उपसंहार

मूल्यांकन उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि बाल गंगाधर तिलक राजनीति में क्रान्तिकारी,किन्तु सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में अनुदार थे। वे आधुनिक भारत के निर्माता थे। वे उग्र थे, परन्तु हिंसक नहीं। वे राष्ट्रभक्त एवं देशभक्त थे, परन्तु उदारवादियों की तरह राजनीतिक भिखारी नहीं। उनमें राजनीतिक आदर्शवाद और यथार्थवाद का अद्भुत समन्वय था। उनमें पैनी सूझ-बूझ,विशाल बोद्धिक क्षमता तथा गहन विद्वता थी। विट्ठलभाई पटेल के शब्दों में, "लोकमान्य तिलक का

व्यक्तित्व महान् था। राजनीति को आराम कुर्सी वाले राजनीतिज्ञों के कमरे से जनता तक ले जाने का श्रेय तिलक को प्राप्त है।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] तहमंकर द. व. (2020). फार गोगाधय ततरक.

[2] 2019, 24 दिसंबर. (2019). लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक.

[3] 2018 बार गोगाधर तिरक का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोरन में योगदान.

[4] मोहित. तिलक: अखबार से शुरू की लड़ाई, जेल में रहकर लिख दी थी किताब.

[5] भारतीवंदना. वो अपने ही अखबार में लिखते थे ऐसा लेख, जाना पड़ा कई बार जेल.

[6] 2005. लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानी : बाल गंगाधर तिलक.

[7] दीपक. (1920). बाल गंगाधर तिलक का कैरियर.

[8] 2019. पुण्यतिथि विशेष : जब तिलक को राजद्रोह के आरोप में भेजा गया 'माण्डले' जेल.